

पाठ-२

सात तत्त्व संबंधी भूल

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

जीवादि सात तत्त्वों का स्वरूप
समझना क्यों आवश्यक है ?

*इसे समझे बिना सम्यग्दर्शन
की प्राप्ति नहीं हो सकती है

जीव-अजीव तत्त्व संबंधी भूल

जीव का स्वरूप

“चेतन को है उपयोग रूप,
चिन्मूरत बिनमूरत अनूप”

जीव का स्वरूप कैसा है ?

*उपयोग रूप

*चैतन्य की मूर्ति (ज्ञान की मूर्ति)

*बिन मूरत(अमूर्त)

*अनूप (जिसकी कोई उपमा नहीं)

“पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल,
इनतें न्यारी है जीव चाल।”

पुद्गल, आकाश, धर्म
द्रव्य, अधर्म द्रव्य,
काल से जीव अलग है



क्योंकि ये अचेतन हैं

जीव



चेतन है

जीव (स्वयं)

पदगल
(मुख्य रूप से शरीर)

* चेतना गुण सहित

* चेतना गुण रहित

(जड़)

* अमूर्तिक

* मूर्तिक

* असंख्यात प्रदेशी

* अनन्त परमाणुओं

एक अखण्ड द्रव्य

का पिण्ड

धर्मादि द्रव्यों की परिणति अपनी मानना

* मैंने चलाया

* मैंने रोका

* मैंने ठहराया

* मैंने परिणमाया

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

“ताको न जान विपरीत मान,
करि करे देह में निज पिछान”

* पुद्गल, धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश,
काल को अपने से भिन्न न जान

* अपने मानता

* शरीर से ही अपनी पहचान मानता

शरीर से ही अपनी पहचान मानने के कारण
जीव 4 प्रकार की विपरीत बुद्धि रखता है

एकत्व

मैं

ममत्व

मेरे

कर्तृत्व

मैं करता

भोक्तृत्व

मैं भोगता

मैं सुखी- दुःखी मैं रंक-राव,
मेरे धन गृह गोधन प्रभाव।

मेरे सुत तिय मैं सबल दीन,
बेरूप-सुभग मूरख प्रवीण॥

अहं बुद्धि (मैं)

- * सुखी
- * दुःखी
- * रूक (गरीब)
- * राव (अमीर)
- * सबल (बलवान)
- * दीन (निर्बल)
- * बेरूप (कुरूप)
- * सुभग (सुन्दर)
- * मूर्ख (गंवार)
- * प्रवीण (होशियार)

ममत्व बुद्धि (मेरा)

- * धन
- * गृह (घर)
- * गोधन (गायादि पशु धन)
- * प्रभाव (ऐश्वर्य)
- * सुत (पुत्र)
- * तिय (पत्नि)

“तन उपजत अपनी उपज जान,
तन नशत आपको नाश मान॥”

*शरीर की उत्पत्ति में अपनी उत्पत्ति
*और शरीर के नाश में अपना नाश
मानना

जीव को
अजीव
मानना



जैसे - स्वयं को
मोटा, पतला, गोरा,
काला मानना

अजीव को
जीव
मानना



जैसे - ज्ञान आत्मा
का है
मानना इन्द्रियों से
होता है

आस्रव तत्त्व संबंधी भूल

रागादि प्रकट जे दुःख देन,
तिनही को सेवत गिनत चैन।

- * राग द्वेष मोह आदि विकारी भाव जो
- * प्रकट में दुःख देने वाले हैं
- * उनको करके अपने को सुखी मानता है

आस्रव
कैसे हैं ?

वर्तमान में

दुःख रूप

आगामी

दुःख के कारण

स्वयं के
कषाय भाव

दुःख का
कारण

परंतु व्यर्थ ही अन्य को दुःख
उत्पन्न करने वाला मानता है

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

अशुभ राग से

आनंद मानता

शुभ राग से

मोक्ष

बंध तत्त्व संबंधी भूल

शुभ अशुभ बंध के फल मंझार,
रति अरति करे निज पद विसार

***शुभ कर्मों के**

फल में



राग करता

***अशुभ कर्मों**

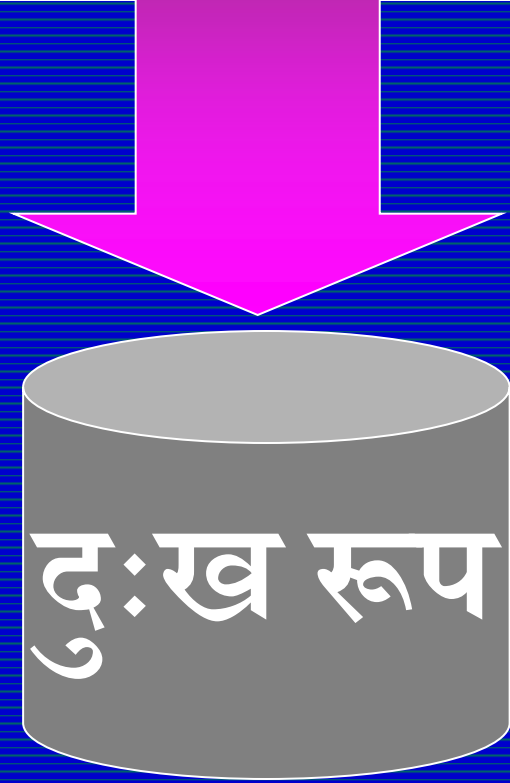
के फल में



द्वेष करता

अपने आत्म स्वरूप को भूल कर

अशुभ कर्मों का फल



शुभ कर्मों का फल



संवर तत्त्व संबंधी भूल

आत्म हित हेतु विराग-ज्ञान,
ते लखे आपको कष्टदान।

आत्मा
के हित
के
कारण

ज्ञान = सम्यग्ज्ञान

वैराग्य = संसार, शरीर और
भोगों से उदासीनता

इन्हें कष्ट देने वाला मानता



जिसे
आस्रव
तत्त्व
संबंधी
भूल है

*उसे संवर तत्त्व
संबंधी भूल है ही

*जो राग में सुख
मानता है

*वो वैराग्य में सुख

कैसे मानेगा ?

संवर कैसा
है ?

वर्तमान में

सुख रूप

आगामी

सुख का कारण

निर्जरा तत्त्व संबंधी भूल

रोके न चाह निज शक्ति खोय

* आत्म शक्ति को भूल कर

* अपनी इच्छाओं का अभाव नहीं

करता

इच्छाओं

की पूर्ति में

सुख
मानता

के अभाव में

सुख
नहीं
मानता

इच्छाओं के रोकने में भी सुख नहीं है



जिसे
बंध
तत्त्व
संबंधी
भूल है

* उसे निर्जरा तत्त्व
संबंधी भूल है ही

* शुभ कर्म के फल
को जो चाहता

* वो इच्छापूर्ति में
सुख मानेगा ही

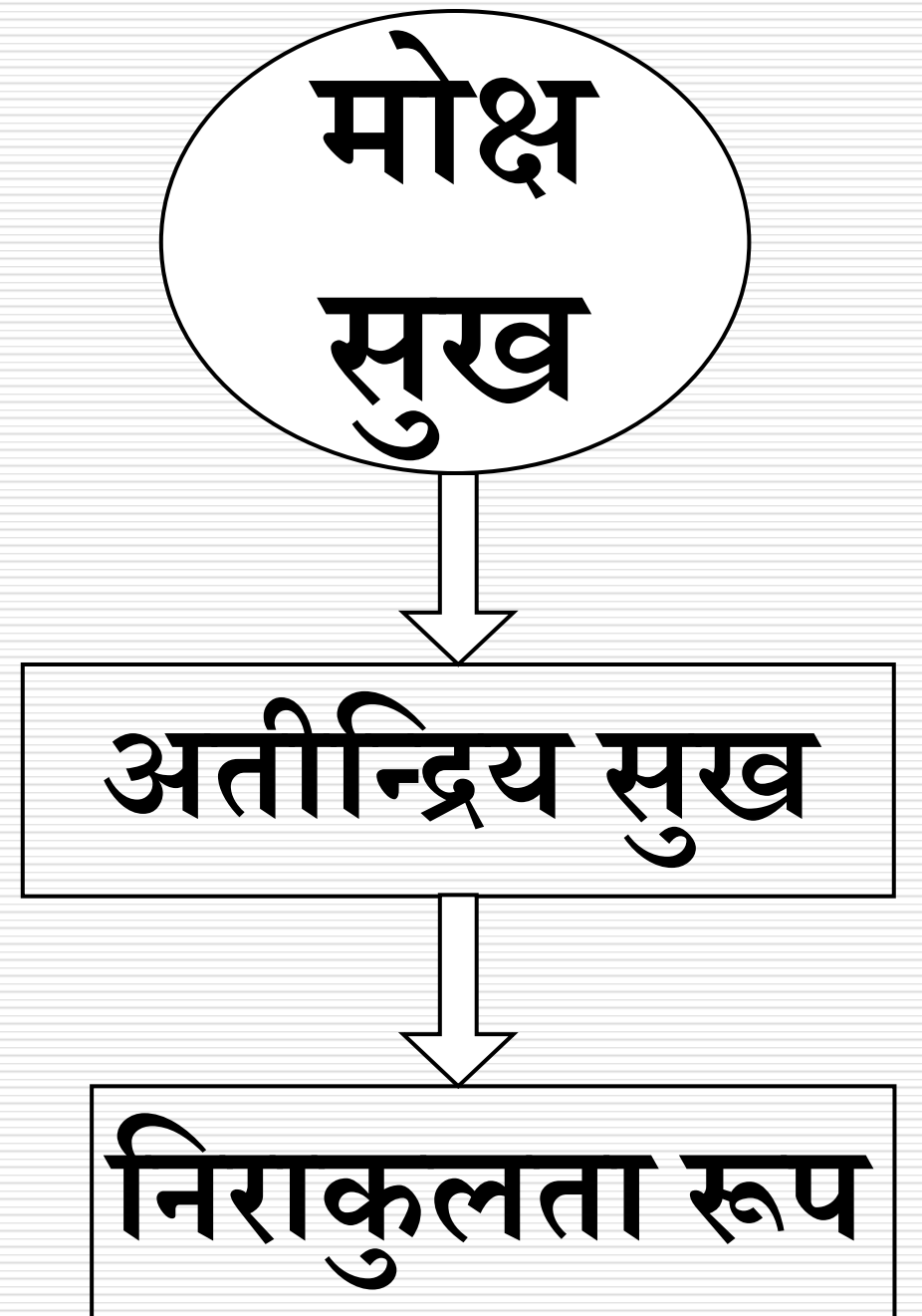
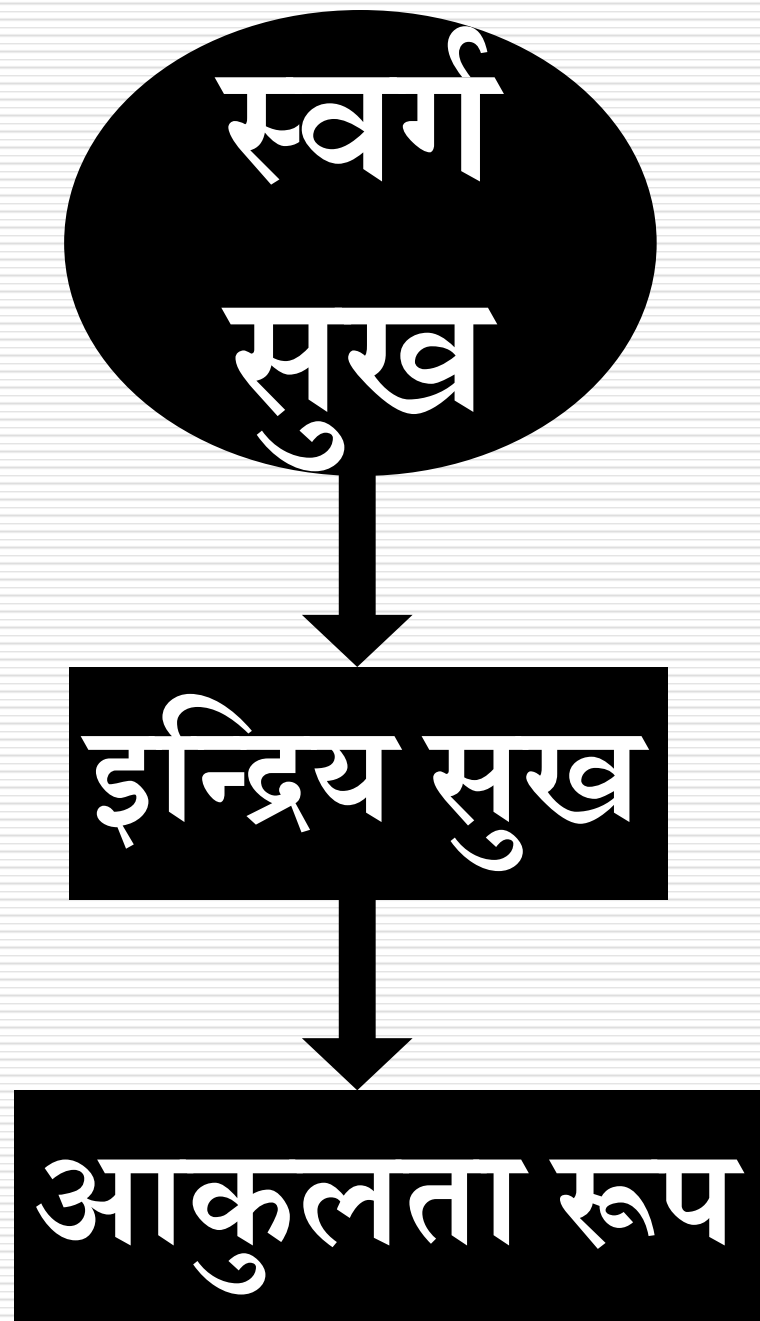
मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल

शिवरूप निराकुलता न जोय॥

*मोक्ष में पूर्ण सच्चा सुख है उसे
नहीं जानता

मोक्ष सुख की जाति
नहीं पहचानता

स्वर्ग के सुख से अनंत गुणा सुख
मोक्ष में है, ऐसा मानता है





जिसे
बंध
तत्त्व
संबंधी
भूल है

* उसे मोक्ष तत्त्व संबंधी
भूल है ही

* पुण्य के फल
(आकुलता) में सुख
मानने वाला

* निराकुलता के सुख को
नहीं जानता

किस तत्त्व संबंधी भूल होने पर अन्य
किस तत्त्व संबंधी भूल होगी ?

जीव	अजीव
आस्रव	संवर
बंध	निर्जरा और मोक्ष

वैसे तो - जिसे एक तत्त्व संबंधी भूल है,
उसे सातों तत्त्वों संबंधी भूल है



दो बातों में सातों का सार

***जीव जुदा**

***रागादि भाव**

पुद्गल जुदा

दुःख रूप